



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 26 अंक: 54 बुलेटिन अवधि: 15-19 जुलाई, 2017 दिन: शुक्रवार दिनांक: 14 जुलाई, 2017

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	15-07-2017	16-07-2017	17-07-2017	18-07-2017	19-07-2017
वर्षा (मिमी0)	10	5	5	15	5
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	34	35	34	33	33
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	25	25	26	26	25
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	95	95	95	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	65	65	65	55	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	004	004	006	006	006
वायु की दिशा	दक्षिण-दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व	पूर्व-उत्तर-पूर्व	पूर्व

आगामी 15 से 19 जुलाई तक हल्की वर्षा होने तथा आसमान में घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (7 से 13 जुलाई, 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम से पूर्णतः बादल छाये रहे तथा 209.2 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 27.0 से 34.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 23.9 से 27.0 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 86 से 98 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 65 से 90 प्रतिशत एवं हवा 3.5 से 8.7 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व-उत्तर-पूर्व व पूर्व-दक्षिण-पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ गन्ने की फसल में जल भराव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें।
- ❖ अगर गन्ने का बढ़वार अच्छा हो तो 5 फीट की ऊंचाई पर गन्ने की बधाई करें।
- ❖ अगोला बेधक एवं चोटी बेधक कीट की रोकथाम हेतु कार्बोफ्यूथ्रान 3जी का 30 किग्रा/हैक्टेयर का प्रयोग करें। इस समय खेत में नमी होना आवश्यक है।
- ❖ मक्का की अल्पकालीन संकुल प्रजातियों कंचन, गौरव, सूर्या, विवेक संकुल-11, 31, 35 एवं प्रकाश आदि की बुवाई इस माह में भी कर सकते हैं।
- ❖ जून में बोई गयी मक्का की फसल में बुवाई के 15 तथा 30 दिन पर निराई-गुड़ाई करें तथा फसल 2 फीट ऊंचाई की होने पर नत्रजन की टाप ड्रेसिंग करें।
- ❖ धान की शीघ्र पकन वाली किस्मों की रोपाई जुलाई के तीसरे सप्ताह तक अवश्य पूरी कर लें।
- ❖ धान के पौध की उम्र रोपाई के लिए 40-45 दिन से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।
- ❖ धान की रोपाई से पहले उसकी जड़ों को कार्बेन्डाजीम 1 ग्राम/लीटर के घोल में आधे घण्टे तक भिगोने के बाद रोपाई करें।
- ❖ रोपाई से पूर्व खेत में जिंक सल्फेट 25 किग्रा/हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- ❖ धान की रोपाई के 15 दिन बाद खेत में घास दिखाई दे तो चौड़ी व संकरी पत्ती के नियंत्रण के लिए विसपायरीबेक सोडियम 10 ईसी 200मिली/ हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- ❖ धान में तना वेधक व पत्ति मरोड़क का प्रकोप होने पर क्लोरान्द्रनिलिप्रोल 0.4 जी को 10000 ग्राम/है० या फिप्रोनिल 0.3 जीआर 25000 ग्राम/है० या कारटाप 4 जीआर 18750 ग्राम /है० की दर से छिड़काव रोपाई से 50 दिन के अन्दर करें।
- ❖ मक्का में जहाँ तना बेधक का प्रकोप होता है। बुवाई के समय कार्बोफ्यूथ्रॉन 3सी०जी० 33 किग्रा०/है० की दर से मृदा में डालें।
- ❖ गन्ना में काला बग का प्रकोप हो तो क्लारपाइरीफॉस 20 ई० सी० के 2.0 ली० /है० या फेन्थोएट 50 ई० सी० के 1.0 ली०/है० या क्यूनसलफॉस 25 ई० सी० के 2.0 ली० को 500 ली० पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- ❖ कीटनाशी का छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।

उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ इस माह में मिर्च की रोपाई मेंडों पर करें, मेंडों पर इसकी दूरी कतार से कतार 50 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 50 सेमी रखें एवं जल निकास की उचित व्यवस्था करें, क्योंकि खेत में 24 घण्टे में पानी रहने से फसल सूख जाती है।
- ❖ जिन किसान भाइयों ने भिण्डी का बीज नहीं बोया है वे बीज की बुवाई शीघ्र कर लें तथा पिछले माह में बोई गयी फसल में निराई-गुड़ाई व जल निकास की व्यवस्था करें।
- ❖ फूलगोभी की अगैती फसल में जल निकास की व्यवस्था करें तथा निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल दें। पौधशाला में गोभी की पौध तैयार हो गई हो तो उनकी रोपाई कतार से कतार 45 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी में करें।
- ❖ वर्षाकाल में 10-12 किग्रा भिण्डी के बीज की आवश्यकता होती है। बोने से पहले बीज का उपचार कवकनाशी दवा से करें बीज बुवाई की दूरी कतार से कतार 60 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी रखें तथा शेष पौधों को उखाड़ दें।
- ❖ भिण्डी की वर्षा कालीन प्रजातियां वर्षा उपहार, पंजाब पद्मिनी, पंजाब-7, पंजाब-1, अरका, अनामिका, अभय, परभनी क्रांति आदि जिसमें पीट शिरा रोधक क्षमता पायी जाती है का चुनाव करें।

- ❖ वर्षाकाल में भिण्डी की फसल में उतराकीट की बहुत समस्या होती है जो उगते हुए बीजों को काटकर नष्ट कर देता है इसके बचाव के लिए खेत में थीमेट 10 किग्रा/हैक्टेयर अथवा पयूराडान 20–25 किग्रा/हैक्टेयर की दर से अवश्य डालें।
- ❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियों पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियों को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फँफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियंत्रण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मिर्च एवं टमाटर की पत्तियां काले पड़ने और फसल में ऊपर से डन्डल काले पड़कर सड़ने की समस्या से निदान हेतु कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्द्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- ❖ टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्द्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- ❖ बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करें।
- ❖ मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- ❖ मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।
- ❖ आम की मध्यम प्रजातियों को तोड़कर उसकी विपणन की व्यवस्था करें।
- ❖ बागीचों में पानी के निकास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- ❖ आम के नये पौधों बनाने हेतु (विनीयर ग्राफिटग) तैयारी करें। नीबू, अनार, करौंदा, सहतूत आदि फल पौधों को कलमों द्वारा प्रवर्धन करें। लीची में एअर लेयरिंग विधि से पौधे बनाने का यह उचित समय है।
- ❖ आम व अमरूद के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य करें।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके यूटरोटाने/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- ❖ पशुओं को बारिश का पानी नहीं पिलाना चाहिए।
- ❖ पशुओं को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- ❖ जुलाई एवं अगस्त महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- ❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- ❖ मानसून के प्रारम्भ में अचानक तेज घूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- ❖ इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से करें।
- ❖ ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर